Notification No.: 571/2024

Date of Award.: 06-Decembar-2024

Name of Scholar: Shaheen

Name of Supervisor: Prof. Hemlata Mahishwar

Name of Department/Faculty: Hindi, Faculty of Humanities & Languages, JMI

Topic of Research: BHUMANDLIKARAN AUR HINDI UPANYAS (DILLI KE VISHESH SANDARBH MEIN)

Keywords:

भूमंडलीकरण, दिल्ली, मध्यवर्ग, स्त्री-पुरुष संबंध, मानवीय मूल्य, वृद्धों की स्थिति, महानगर.

Findings:

हिंदी कथा साहित्य का परिवेश बदलाव के अनेक परिदृश्य को अपने अंदर समेटे हुए है। समाज में जैसे-जैसे परिवर्तन हुआ, सामाजिक परिस्थितियां बदली। सामंतशाही के अंत के साथ एक नई व्यवस्था से हमारा परिचय हुआ। आधुनिक काल में इस भूमंडलीकृत व्यवस्था को हमारे समक्ष लाने का कार्य 'उपन्यास' नामक विधा ने बखूबी किया है। उपन्यास मूलतः पूंजीवादी व्यवस्था की देन है, जो समय के साथ अपनी नवीन भूमिका निर्मित करता रहा है। इस सभ्यता के विभिन्न जीवन-मूल्यों और समाज में व्याप्त विषमताओं और मानव मन की उधेड़-बुन को उपन्यासकारों द्वारा चित्रित किया गया। तृतीय स्थानक देशों में भारत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। दिल्ली इस विशाल लोकतांत्रिक देश की राजधानी है। यह एक ऐसा महानगर है जिसमें समूचे भारत का प्रतिनिधित्व समाया हुआ है। हर एक राज्य, हर एक वर्ग, हर एक यौनिकता, हर एक धर्म आदि की सहज उपस्थिति दिल्ली की जनसंख्या में देखी जा सकती है। वैश्विक परिदृश्य में होने वाली किसी भी राजनैतिक, आर्थिक निर्णयों एवं नीतियों का सीधा और तत्काल प्रभाव दिल्ली में सहज ही दृष्टव्य है। इतना ही नहीं, इसका प्रभाव साहित्य और संस्कृति पर परिलक्षित होना स्वाभाविक है। भूमंडलीकरण से प्रभावित दिल्ली केंद्रित उपन्यासों का अध्ययन इस शोध कार्य में अभिप्रेत है।

विवेच्चय उपन्यासों में भूमंडलीकृत समाज एक ऐसे बाज़ार के रूप में है जहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता का महत्व है। यहाँ, निर्णय लेने की क्षमता केवल धनिक वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह पुरुष हो या महिला, अपनी पसंद की खोज में स्वतंत्र है। स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सजग है। शिक्षा ने स्त्रियों के जीवन को सुधारने में अहम भूमिका निभायी है। शिक्षित होने के नाते धर्म, संस्कृति, इतिहास में वह अपने विविध संदर्भों को तलाश रही हैं। मानवीय संबंधों पर पड़ने

वाले कारकों में मनुष्य का संवेदना शून्य, मानसिक विचलन, उदासी, समाज और व्यक्ति के बीच खालीपन स्पष्ट दिखाई देता है। दिल्ली केंद्रित हिंदी उपन्यासों ने सामाजिक-आर्थिक विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को यथार्थवादी ढंग से चित्रित किया है। इनमें प्रतिरोध की आवाज़ें, जीवन मूल्यों का क्षरण, अधिकारों के प्रति बढ़ती जागरूकता, उच्च, मध्य और निम्न वर्गों के बीच द्वंद्व, बदलते स्त्री-पुरुष संबंध आदि शामिल हैं। महानगरों का तेजी से विकास और आधुनिक जीवन शैली ने वृद्धों के जीवन को कई तरह से प्रभावित किया है। एक ओर जहां महानगरों में वृद्धों के लिए बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं और सामाजिक गतिविधियाँ उपलब्ध हैं, वहीं दूसरी ओर उन्हें कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। जिसमें अकेलापन, सामाजिक अलगाव, परिवार की अनदेखी आदि| उपन्यासों में भाषा का प्रयोग परिवेश और परिस्थितियों के अनुरूप मिश्रित भाषाई प्रयोग दिखाई देता है।